सत्य दर्शन

ब्रह्मनाद स्पंदन

लेखक
दुर्गा प्रसाद शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

अल्ख दर्शन

ब्रह्म नाद स्पन्दन

लेखक- दुर्गा प्रसाद शर्मा

(स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)

Scanned with OKEN Scanner

संस्करण- प्रथम

प्रतियाँ - 500

प्रकाशक- जिला सर्वोदय मण्डल,
टीकमगढ़ (म0प्र0)

लोकार्पण- 3 जून 2004
गुरू पूर्णिमा

सहयोग राशि- 51 रू.

मुद्रण- **गोपिका ऑफसेट**
पुरानी तहसील के पास, टीकमगढ़

कम्प्यूटर- **राजीव कम्प्यूटर ग्राफिक्स**
शिवम् टॉकीज के पास, टीकमगढ़
फोन नं. 07683 - 245565

विषय सूची

पृष्ठ सं.

समर्पण
सम्पादकीय
प्रकाशक

प्रथम अध्याय

१. विषय प्रवेश 1
२. सत्य शब्द का विश्लेषण 4
३. विकासबाद का संक्षिप्त रूप 9
४. पाश्चात्य वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों का स्वतंत्र विचार प्रवाह 11

द्वितीय अध्याय

१. शान्तात्वा का विश्लेषण 26
२. सृष्टि के मूल व्यक्तित्व बिन्दुओं का खुलासा 32
३. समता और प्रेम की संक्षिप्त विवेचना 57

तृतीय अध्याय

१. कोरे पत्र के जबाव का परिचय संक्षेप में 61
२. आत्मबोध के तत्वों का वर्णन तथा साधना विवेचन 62
३. सुख और आनन्द का अन्तर 78
४. विभिन्न आनन्द के स्वरूप 79

Scanned with OKEN Scanner

समर्पण

"यह सत्य दर्शन" उसी अस्तित्व को समर्पित है जिसमें सत्य, असत्य और सत्यासत्य सभी का समावेश है। ऐसा अद्वितीय तत्व जो सच्चिदानन्द का स्वरूप लिये सार्वभौमिक, सार्वकालिक, तत् सत् सर्वत्र है। तभी तो उपनिषद ने कहा है "ईशावाह्यमिदं सर्वम् यत्किं च जगत्यां जगत" सबमें उसी की सत्ता है। जगत में जो कुछ भी है। जगत के अन्दर जगत अथवा बाहर का जगत उसी अस्तित्व में यह अल्प संक्षिप्त रूप "सत्य दर्शन" उसी ब्रह्म महान विराट को समर्पित है। जैसे घटा काश महाकाश में समर्पित होकर व्याप्त हो जाता है।

दुर्गाप्रसाद शर्मा
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

Scanned with OKEN Scanner